नागरिक घोषणा पत्र

Annual Report

2024

सम्पादक

डॉ० जीतराम भट्ट
निदेशक

डॉ० गो० गि० ला० शा० प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानम्
दिल्ली सर्वकार
भूखण्डसंख्या-५, झण्डेवालानम्, करोलबाग, नवदेहली-११०००५

डॉ० गो० गि० ला० शा० प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानम्

दिल्ली सर्वकार

भूखण्डसंख्या–५, झण्डेवालानम्, करोलबाग, नवदेहली–११०००५

का

परिचय

प्रतिष्ठान की स्थापना

संस्कृत भाषा के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए तथा राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, भाषा एवं साहित्य के संरक्षण और विकास के प्रति अपने दायित्व को समझते हुए देश व राज्य की सरकारें राष्ट्रीय अखण्डता व भाषायी एकता की प्रतीक संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के लिए अधिकाधिक प्रयत्नशील हैं।

दिल्ली सरकार द्वारा राष्ट्रिय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार (कला संस्कृति एवं भाषा विभाग) दिल्ली सचिवालय नई दिल्ली ११०००२ की अधिसूचना सं एफ ३ (४५) दि.सं.अ/२००२-२००३/१८६६-१६७८ दिनांक ०३-१०-२००३ द्वारा अधिसूचित एवं संचालित स्वायत्त संस्था डॉ० गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना की गयी है।

भारत की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली होने के कारण दिल्ली सरकार के समस्त चिन्तन का प्रभाव सम्पूर्ण भारत वर्ष पर ही नहीं, अपितु समस्त विश्व पर पड़ता है। राजधानी के इस गरिमामय महत्त्व एवम् उपर्युक्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए दिल्ली सरकार ने संस्कृतभाषा एवं अन्य प्राचीन भाषाओं में सन्निहित वेद, योग, अध्यात्म, चिकित्सा, साहित्य, संगीत, कला, पुरातत्त्व, वास्तु, सैन्य, गणित, भौतिक, रसायन, कृषि, भूगर्भ, जल, पर्यावरण, अन्तरिक्ष, ध्वनि, व्याकरण, दर्शन आदि समस्त भारतीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षण-व्यवस्था हेतु व उपर्युक्त

उद्देश्यों को पूर्ण करने वाली संस्कृत संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करने हेतु संस्कृत एवं ज्योतिष के पुरोधा विद्वान्, राष्ट्रिय एवं प्रादेशिक स्तर पर अनेक संस्कृतसंस्थाओं के जन्मदाता डॉ० गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की पवित्र भावना से उनके नाम पर दिनांक ०३-१०-२००३ को ''डॉ० गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठानम्'' की स्थापना की है, जो संस्कृत के अध्ययन एवं शोधकार्य के प्रचार-प्रसार हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है।

प्रतिष्ठान के उद्देश्य

१) संस्कृत भाषा एवं अन्य प्राच्य भारतीय भाषाओं में सन्निहित, मन्त्र, योग, अध्यात्म, चिकित्सा, साहित्य, संगीत, कला, पुरातत्त्व, अभिलेख, वास्तु, सैन्य, गणित, संगणक, भौतिक, रसायन, कृषि, पर्यटन, वन, प्राणिविज्ञान, भूगर्भ, जल, पर्यावरण, काव्यशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन, सूचना-प्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, विद्युत्, धातु, ध्वनि, व्याकरण, साहित्य आदि समस्त ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकि शिक्षादि समस्त प्राच्य-विद्याओं के अध्ययन एवं अध्यापन, शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु परीक्षाओं का संचालन करना तथा तत्सम्बन्धी संकायों की स्थापना करना एवं शिक्षण-व्यवस्था करना। इन उद्देश्यों को पूर्ण करने वाली संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करना।

२) प्राच्य एवं आधुनिक वैज्ञानिक एवं अन्य विद्याओं का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन-अध्यापन करना। साथ ही परम्परागत संस्कृत-पाठशालाओं के पाठ्यक्रमानुसार परीक्षाओं की व्यवस्था एवं उनका संचालन करना। उन्हें सम्बद्धता देना।

३) संस्कृत-शिक्षा की प्राथमिक, माध्यमिक, स्नातक-स्नातकोत्तर, शोध स्तर की परीक्षाओं को चलाना तथा प्रमाणपत्र एवं उपाधि प्रदान करना। उनकी मान्यता के लिए सभी विश्वविद्यालयों एवं भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों से मान्यता प्राप्त करना, दिल्ली सरकार की सेवाओं में इन परीक्षाओं को प्राथमिकता देना।

४) सभी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक अध्ययन-अध्यापन एवं प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना।

५) सभी परीक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम बनाना एवं तत्सम्बन्धी समस्त सामग्री का लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन करना। इस प्रतिष्ठान के माध्यम से निम्नलिखित परीक्षाएं संचालित होगीं। इन्हीं परीक्षाओं को सम्बद्धता दी जायेगी।

(क) **प्रथमा** (त्रिवर्षीय) मिडिल स्तर

(ख) **पूर्वमध्यमा** (द्विवर्षीय) दशम कक्षा स्तर

(ग) **उत्तरमध्यमा** (द्विवर्षीय) द्वादश कक्षा स्तर

(घ) **शास्त्री** (त्रिवर्षीय) स्नातक स्तर

(ङ) **आचार्य** (द्विवर्षीय) परास्नातक स्तर

(च) **शिक्षा-शास्त्री** (दो वर्षीय) बी.एड. स्तर

(छ) **शिक्षाचार्य** (एक वर्षीय) एम.एड. स्तर

(ज) **विद्यावारिधि** (द्विवर्षीय) पीएच.डी स्तर

(झ) **विद्यावाचस्पति** (द्विवर्षीय) डी.लिट्. स्तर

भारतवर्ष में इस प्रकार के सभी संस्थानों में मुख्यतया, इसी रूप में परीक्षाएं एवं पाठ्यक्रम प्रचलित हैं। स्थिति के अनुसार समय-समय पर पाठ्यक्रम परिवर्तित भी हो सकते हैं।

(६) सभी छात्रों के लिए निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठ्य-पुस्तक तैयार करना, उसका सम्पादन व प्रकाशन करना, साथ ही विभिन्न प्रकार के संस्कृत-सन्दर्भ-ग्रन्थों को प्रकाशित करना। तत्सम्बन्धी सन्दर्भ-ग्रन्थों का निर्माण एवं प्रकाशन करना। इस प्रकरण से सम्बन्धित कार्यशालाओं का आयोजन करना।

(७) प्रतिष्ठान के संकायों में पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति, पुरस्कार, पाठ्यपुस्तकें प्रदान करना, परिस्थिति के अनुसार मेधावी छात्रों को छात्रावास, भोजनादि की व्यवस्था करना। सम्बद्ध संस्कृत-पाठशालाओं के छात्रों को भी उपर्युक्त सुविधाएं प्रदान करना।

(८) प्राच्य एवं अर्वाचीन समस्त साहित्य के ग्रन्थागार के रूप में एक सुसमृद्ध पुस्तकालय की स्थापना करना।

प्रतिष्ठान के कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

डॉ० गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान दिल्ली सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था है। प्रतिष्ठान द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं पारम्परिक संस्कृत-शिक्षा-पद्धति के संरक्षण तथा संस्कृत-विद्यालयों को मान्यता प्रदान करने हेतु प्रतिवर्ष निम्नलिखित कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ संचालित किए जाते हैं, जो प्रतिष्ठान की शासी परिषद् द्वारा समय-समय पर निर्धारित नीति के अनुसार सम्पन्न कराए जाते हैं तथा अनुदान राशि की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं।

१. द्विदिवसीया पाठ्यक्रम पुनरीक्षण कार्यशाला

२. प्रतिष्ठान की गतिविधियों पर कार्यशाला/सिटीजन चार्टर

३. संस्कृत पुस्तक निर्माण कार्यशाला

४. संस्कृत विद्यालयों के प्राचार्यों का सम्मेलन

५. संस्कृत दिवस/ गुरुकुलीय शिक्षक सम्मेलन

६. संस्कृत के पारम्परिक छात्रों के लिए प्रतियोगिताएँ

७. गुरुकुलीय शिक्षा-संगोष्ठी

८. संस्कृत शिक्षक संगोष्ठी

९. संस्कृत-ग्रन्थ लोकार्पण

१०. प्राच्य विद्याओं पर आधारित परिचर्चा

११. संस्कृत विद्यालयों के छात्रों की वार्षिक परीक्षाएँ

१२. संस्कृत-विद्यालयों के शिक्षकों के लिए पुरश्चर्या पाठ्यक्रम

१३. छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए दीक्षान्त समारोह

१४. प्रतिष्ठान-स्थापना दिवस समारोह

१५. पाठ्यक्रम निर्माण कार्यशाला

१६. संस्कृत छात्र सम्मेलन

१७. विविध विषयों पर व्याख्यानमाला

१८. जिज्ञासुओं के लिए संस्कृत-शिक्षण -कक्षाएं

१६. राज्यस्तरीय संस्कृत प्रतियोगिताएं

२०. अखिल भारतीय स्तर की संस्कृत प्रतियोगिताएं

२१. प्रतिभावान् छात्रों के लिए छात्रवृत्ति

इनके अतिरिक्त भी समय-समय पर समिति एवं शासी परिषद् द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का क्रियान्वयन।

पारदर्शिता एवं लोकशिकायतों का निवारण

डॉ० गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के सभी कार्यक्रमों से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाएँ एवं मार्गदर्शन समय-समय पर प्रसारित किये जाते हैं, साथ ही प्रतिष्ठान की गतिविधियों में आम लोगों की और विषय-विशेषज्ञों की भागीदारी, वित्तीय जवाबदेही, लोकशिकायतों के निवारण और पारदर्शिता लाने की दिशा में प्रतिष्ठान द्वारा विभिन्न माध्यमों से उल्लेखनीय प्रयास किये गये हैं। प्रतिष्ठान की गतिविधियों से सम्बन्धित कोई भी आवेदनकर्ता या जिज्ञासु अपनी कठिनाई व शिकायत बताने के लिए निम्नलिखित अधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं।

अधिकारी का नाम	**पद**	**दूरभाष**
डॉ० जीतराम भट्ट	**निदेशक**	23520859 का०

प्रतिष्ठान के प्रकाशनों की सूची

क्र.सं.	प्रकाशनों का विवरण	मूल्य (रुपये)
1.	नियमावली	70
2.	पाठ्यक्रम प्रथमा परीक्षा	50
3.	पाठ्यक्रम (प्रथमापरीक्षा से आचार्यपरीक्षा तक)	100
4.	पाठ्यक्रम (प्रथमापरीक्षा से उत्तरमध्यमापरीक्षा तक)	50
5.	पाठ्यक्रम (शास्त्रीपरीक्षा से आचार्यपरीक्षा तक)	50
6.	पाठ्यक्रम (शिक्षाशास्त्रीपरीक्षा)	50
7.	व्याकरणकौमुदी (प्रथमो भागः)	235
8.	व्याकरणकौमुदी (द्वितीयो भागः)	370
9.	व्याकरणकौमुदी (तृतीयो भागः)	430
10.	वाक्यरचनाप्रदीपः (प्रथमो भागः)	80
11.	वाक्यरचनाप्रदीपः (द्वितीयो भागः)	80
12.	साहित्यमञ्जरी (प्रथमो भागः)	75
13.	साहित्यमञ्जरी (द्वितीयो भागः)	80
14.	साहित्यमञ्जरी (तृतीयो भागः)	100
15.	भारतीयविज्ञानचन्द्रिका (प्रथमो भागः)	90
16.	भारतीयविज्ञानचन्द्रिका (द्वितीयो भागः)	100
17.	भारतीयविज्ञानचन्द्रिका (तृतीयो भागः)	170
18.	स्वयमेव संस्कृतशिक्षणम्	150

19.	संस्कृत स्वाध्यायनम्	150
20.	संस्कृत शिक्षण काव्यम्	150
21.	संस्कृत वाग्-व्याहरणम्	150
22.	संस्कृत गीत निर्झरणि	100
23.	वरान्निबोधत	175
24.	संस्कृत शिक्षावली	150

डॉ० गो० गि० ला० शा० प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानम्
दिल्ली सर्वकार
भूखण्डसंख्या-५, झण्डेवालानम्, करोलबाग, नवदेहली-११०००५